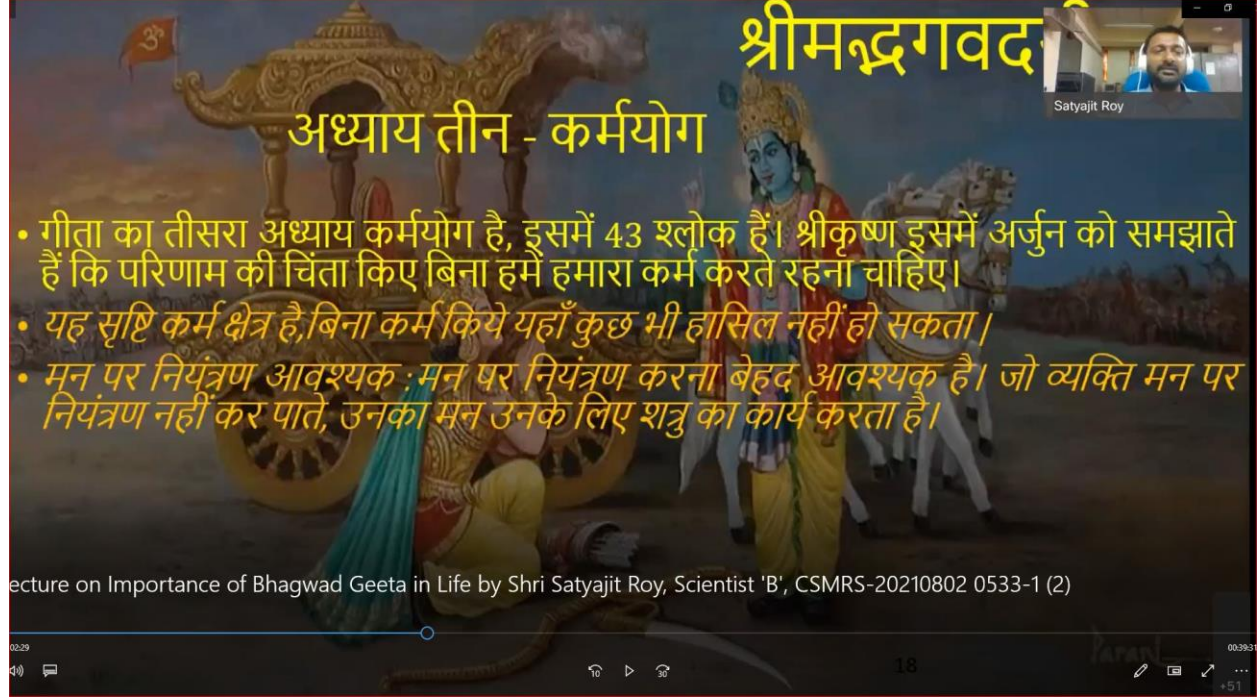


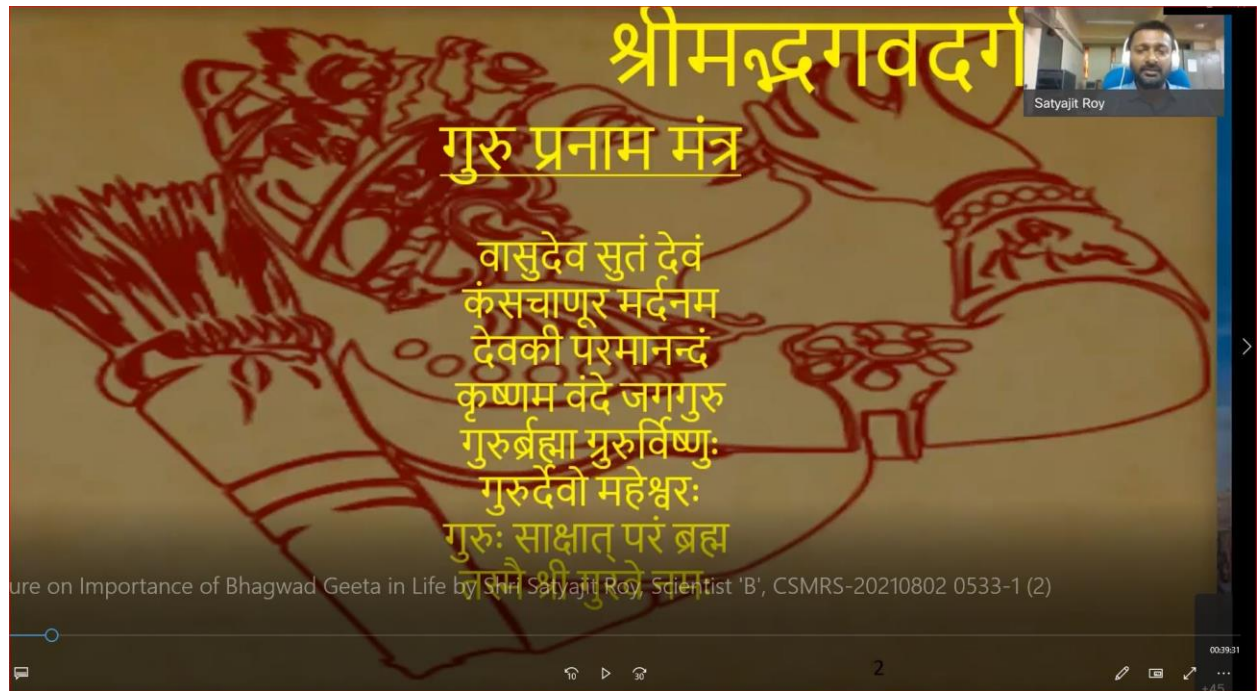
आजादी का अमृत महोत्सव (India@75) कार्यक्रम के दौरान दिनांक 02.08.2021 को केन्द्रीय मृदा एवं सामग्री अनुसंधानशाला में "भगवद्गीता का जीवन में महत्व" के विषय पर श्री सत्यजीत रॉय, वैज्ञानिक 'बी' द्वारा ऑनलाइन भाषण दिया गया । [#आजादीकाअमृतमहोत्सव](#)



श्रीमद्भगवद्गीता
अध्याय तीन - कर्मयोग

- गीता का तीसरा अध्याय कर्मयोग है, इसमें 43 श्लोक हैं। श्रीकृष्ण इसमें अर्जुन को समझाते हैं कि परिणाम की चिंता किए बिना हमें हमारा कर्म करते रहना चाहिए।
- यह सृष्टि कर्म क्षेत्र है, बिना कर्म किये यहाँ कुछ भी हासिल नहीं हो सकता।
- मन पर नियंत्रण आवश्यक : मन पर नियंत्रण करना बेहद आवश्यक है। जो व्यक्ति मन पर नियंत्रण नहीं कर पाते, उनका मन उनके लिए शत्रु का कार्य करता है।

ecture on Importance of Bhagwad Geeta in Life by Shri Satyajit Roy, Scientist 'B', CSMRS-20210802 0533-1 (2)

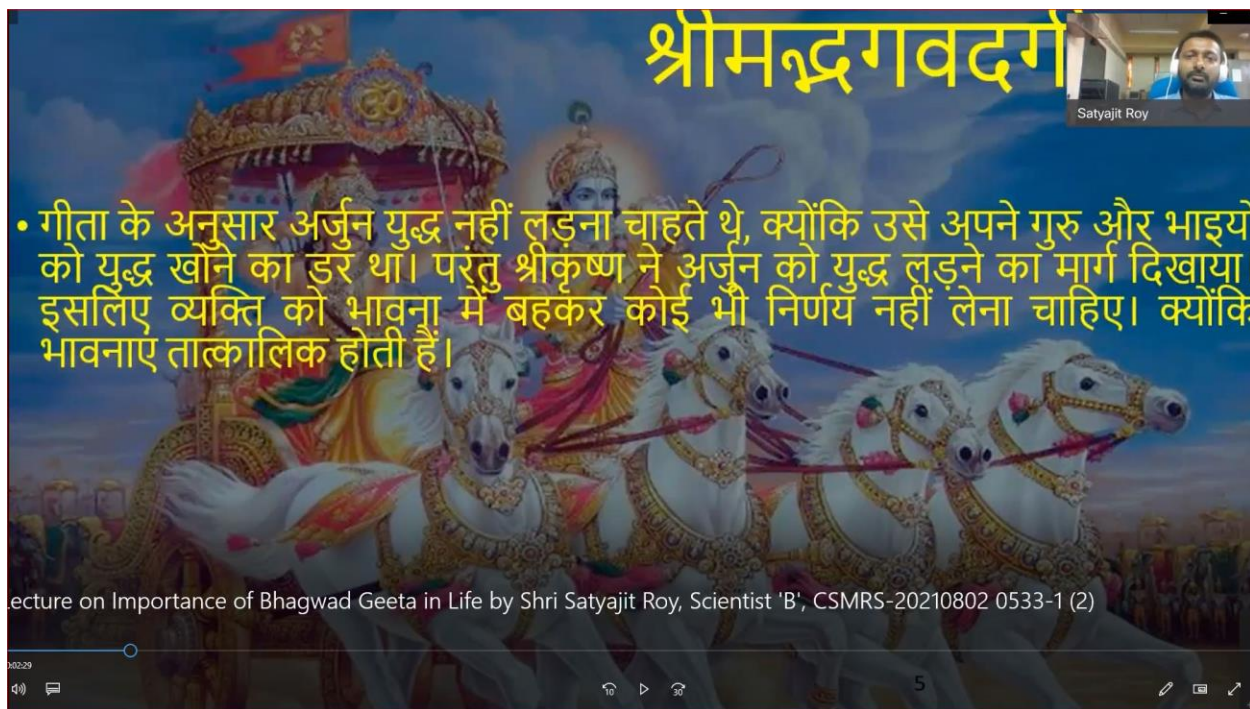


श्रीमद्भगवद्गीता
गुरु प्रनाम मंत्र

वासुदेव सुतं देवं
कंसचाणूर मर्दनम
देवकी परमानन्दं
कृष्णम वन्दे जगगुरु
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः
गुरुर्देवो महेश्वरः
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म
जगन्मै श्री गुरुदेवे नमः

ecture on Importance of Bhagwad Geeta in Life by Shri Satyajit Roy, Scientist 'B', CSMRS-20210802 0533-1 (2)

श्रीमद्भगवद्गीता



- गीता के अनुसार अर्जुन युद्ध नहीं लड़ना चाहते थे, क्योंकि उसे अपने गुरु और भाइयों को युद्ध खोने का डर था। परंतु श्रीकृष्ण ने अर्जुन को युद्ध लड़ने का मार्ग दिखाया। इसलिए व्यक्ति को भावना में बहकर कोई भी निर्णय नहीं लेना चाहिए। क्योंकि भावनाएँ तात्कालिक होती हैं।

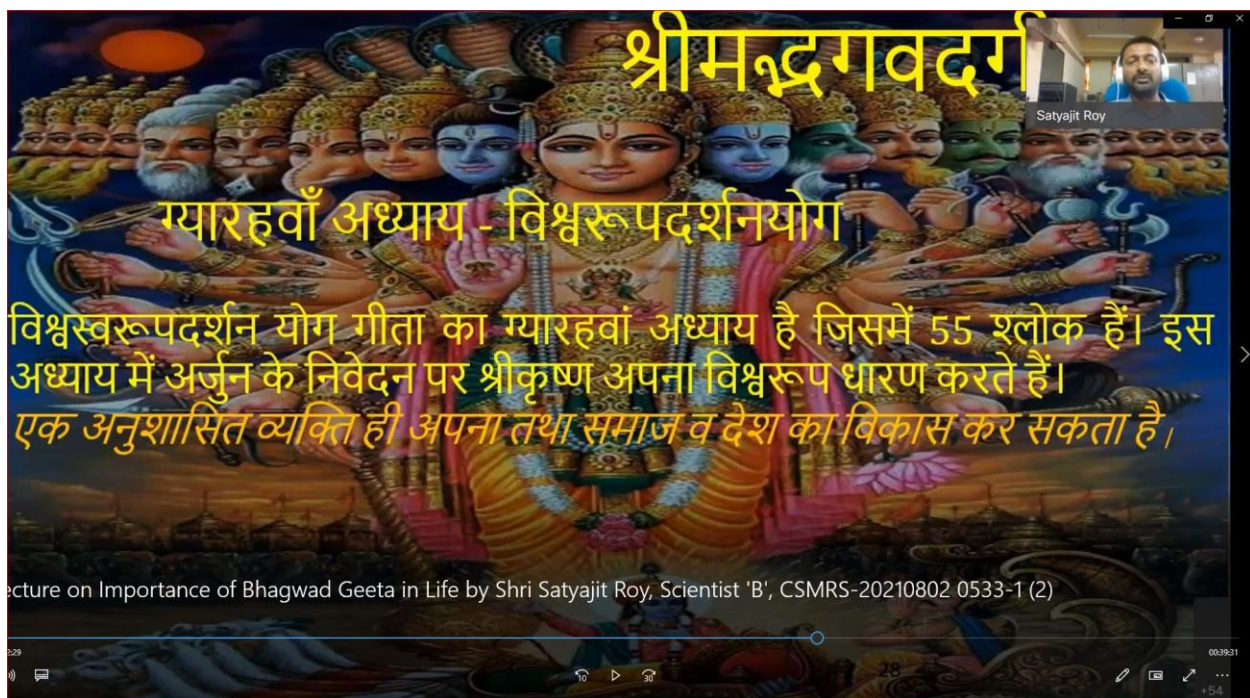
ecture on Importance of Bhagwad Geeta in Life by Shri Satyajit Roy, Scientist 'B', CSMRS-20210802 0533-1 (2)

00:29

5

श्रीमद्भगवद्गीता

ग्यारहवाँ अध्याय - विश्वरूपदर्शनयोग



विश्वस्वरूपदर्शन योग गीता का ग्यारहवाँ अध्याय है जिसमें 55 श्लोक हैं। इस अध्याय में अर्जुन के निवेदन पर श्रीकृष्ण अपना विश्वरूप धारण करते हैं। एक अनुशासित व्यक्ति ही अपना तथा समाज व देश का विकास कर सकता है।

ecture on Importance of Bhagwad Geeta in Life by Shri Satyajit Roy, Scientist 'B', CSMRS-20210802 0533-1 (2)

00:29

00:39:31

+54